कार्तिक
महिमामृत

विषय सूची

कार्तिक मास उत्सव

ऊखल–बंधन लीला : श्री विश्वनाथ चक्रवर्ती ठाकुर के अनुसार कार्तिक मास में दीपावली के दिन ही भगवान् ने दामोदर लीला की, जिसका विवरण श्रीमद्भागवतम् के दशम् स्कन्ध में आता है। इस लीला में बाल–कृष्ण माखन की मटकियाँ फोड़कर माँ यशोदा को क्रोधित कर देते है। आवेश में आकर जैसे ही यशोदा माता उन्हें दण्ड देने के लिए खड़ी होती है तभी कृष्ण वहाँ से भाग जाते है। बहुत परिश्रम के पश्चात् अन्ततः यशोदा माता कृष्ण को पकड़ने में सफल होती है और उन्हें ऊखल से बाँधने का प्रयास करती है। दुर्भाग्यवश, जब रस्सी को गाँठ लगाने का समय आया तो वह रस्सी लम्बाई में दो अँगुली

छोटी पड़ गई। जब यशोदा मैया ने उसमें और रस्सी जोड़कर श्रीकृष्ण को बाँधने का प्रयास किया तो वह पुनः दो अँगुली छोटी रही। वह बार–बार प्रयास कर रही थी तथा रस्सी बार–बार दो अँगुली छोटी पड़ रही थी। अंततः वे बहुत थक गई तथा श्रीकृष्ण ने अपनी स्नेहमयी माँ को थकी देखकर बँधना स्वीकार कर लिया और उनका नाम पड़ा– '**दामोदर**' अर्थात **जिनका उदर (पेट) दाम (रस्सी) से बँध गया।** यह लीला दर्शाती है कि पूर्ण पुरूषोत्तम भगवान् कृष्ण को केवल प्रेम के बन्धन द्वारा ही बाँधा जा सकता है।

जब यशोदा मैया श्रीकृष्ण को बाँधकर घर के अन्य कार्यों में व्यस्त हो गई, तो श्रीकृष्ण ने दो यमुलार्जुन पेड़ देखे। वे वास्तव में कुबेर के दो पुत्र नलकूबर

तथा मणिग्रीव थे, जो नारद् मुनि द्वारा शापित किये गए थे और पेड़ बने हुए थे। श्री कृष्ण अपनी अहैतुकी कृपा से नारद मुनि की इच्छा पूर्ति के लिए उनकी ओर बढ़े।

कार्तिक महात्मय:

(श्रील गोपालभट् गोस्वामी कृत हरि भक्ति विलास के सोलहवें विलास के पहले खण्ड से)

स्कन्ध पुराण में कहा गया है– "समस्त तीर्थ स्थलों में स्नान करने, दान देने आदि से कार्तिक व्रत पालन की तुलना में एक लाखवाँ फल भी प्राप्त नहीं होता।

पद्मपुराण में कहा गया है– "बारह महीनों में से कार्तिक मास भगवान् को सर्वाधिक प्रिय है। इस मास में यदि कोई भगवान् विष्णु की थोड़ी सी भी पूजा करता है तो कार्तिक मास उसे भगवान् विष्णु के दिव्य धाम में निवास प्रदान करता है।

''कार्तिक महिने में मात्र एक दीपक अर्पित करने से भगवान् कृष्ण प्रसन्न हो जाते है। भगवान् कृष्ण ऐसे व्यक्ति का भी गुणगान करते है जो दीपक जलाकर अन्यों को अर्पित करने के लिए देता है।

''हे ऋषियों में श्रेष्ठ, कार्तिक मास में भगवान् हरि की महिमाओं का श्रवण करने वाला व्यक्ति सैकड़ों लाखो जन्मों के कष्टों से मुक्त हो जाता है।

''कार्तिक महिने में जो व्यक्ति स्नान करके रात्रि जागरण करता है, दीपक अर्पित करता है और तुलसी वन की रक्षा करता है, वह भगवान् विष्णु के समान आध्यात्मिक देह प्राप्त करता है।''

कार्तिक में भक्ति करना

पद्म पुराण में कहा गया है कि अपनी आर्थिक स्थिति के अनुसार हर व्यक्ति को चाहिए कि भगवान् के विभिन्न उत्सवों एवं समारोहों को अवश्य मनाये।

इन सर्वाधिक महत्वपूर्ण उत्सवों में एक उत्सव है– 'ऊर्जा–व्रत'। यह कार्तिक (अक्टूबर–नवम्बर) मास में मनाया जाता है। इस उत्सव में विशेषतया वृन्दावन में दामोदर रूप में भगवान् के अर्चाविग्रह की पूजा का विशेष कार्यक्रम होता है। दामोदर का संदर्भ है, अपनी माता यशोदा द्वारा कृष्ण को रस्सी से बाँधा जाना। कहा जाता है कि जिस प्रकार भगवान् दामोदर अपने भक्तों को अत्यन्त प्रिय है उसी प्रकार दामोदर मास अर्थात् कार्तिक मास भी उन्हें अति प्रिय है।
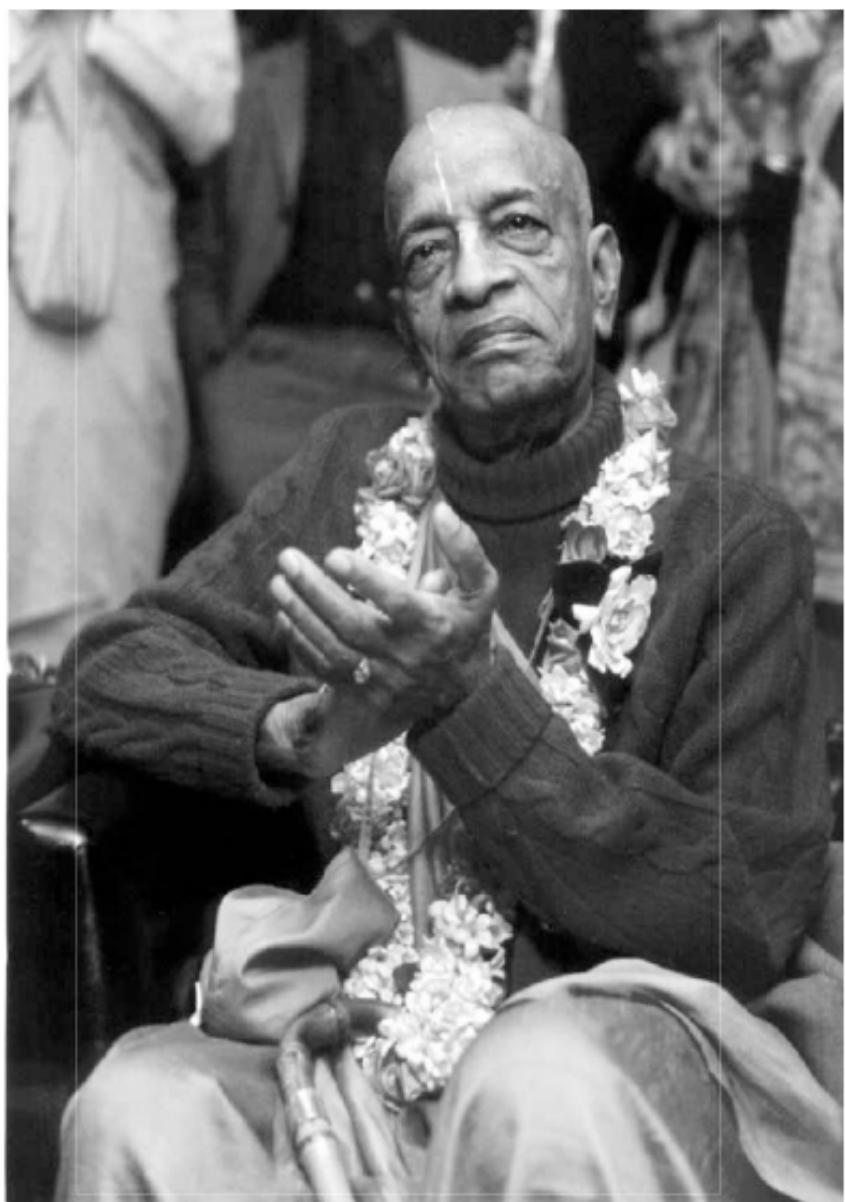
कार्तिक मास में 'ऊर्जा—व्रत' के समय मथुरा में भक्ति करने की विशेष संस्तुति की जाती है। आज भी उनके भक्त इस प्रथा का पालन करते है। वे मथुरा या वृन्दावन में पूरे कार्तिक मास में भक्ति करने के उद्देश्य से वहाँ जाकर ठहरते है।

पद्म—पुराण में कहा गया है 'भगवान् भक्त को मुक्ति या भौतिक सुख तो दे सकते है, किन्तु भक्तगण कार्तिक मास में मथुरा में रह कर कुछ भक्ति कर लेने पर ही भगवान् की शुद्ध भक्ति प्राप्त करना चाहते हैं। तात्पर्य यह है कि भगवान उन सामान्य व्यक्तियों को भक्ति नहीं प्रदान करते, जो भक्ति के विषय में निष्ठावान नहीं है। किन्तु ऐसे निष्ठारहित व्यक्ति भी यदि कार्तिक

मास में विशेषतया मथुरा मण्डल में रह कर विधिपूर्वक भक्ति करते है, तो उन्हें भगवान् की व्यक्तिगत सेवा प्राप्त होती है। (भक्तिरसामृत सिन्धु, अध्याय 12)

कार्तिक अनुपालन कैसे करें?

भक्तः श्रील प्रभुपाद आज 'ऊर्जा–व्रत' (कार्तिक–व्रत) का प्रारम्भ है। क्या आप वर्णन कर सकते हैं– 'ऊर्जा–व्रत' क्या है? इसका पालन कैसे किया जाये?

प्रभुपादः 'ऊर्जा–व्रत', आप एक महीने तक 24 घंटे 'हरे कृष्ण' महामन्त्र का जप करें। (सब लोग हँस पड़े) बस यही!

भक्तः हरे कृष्ण, हरे कृष्ण,
कृष्ण कृष्ण हरे हरे......

प्रभुपादः हाँ सोओ मत, खाओ मत, यही 'ऊर्जा–व्रत' है। क्या तुम इसका पालन कर सकते हो?

भक्तः मालूम नहीं। (सब हँस पड़े)

संक्षिप्त रूप में कार्तिक व्रत पालन कैसे करें:

भूमिका: कार्तिक मास एक विशेष मास है जिसमें राधा दामोदर भगवान की उपासना की जाती है। कार्तिक मास की अधिष्ठात्री देवी श्रीमती राधिका है इसलिए ये मास श्रीकृष्ण को प्रिय है। इस मास में अल्प प्रयास द्वारा राधारानी शीघ्र प्रसन्न हो जाती है, अगर व्यक्ति उनकी आराधना उनके प्रियतम दामोदर के साथ करता है।

प्रार्थना: ''हे जनार्दन, हे दामोदर, हे देव, आप जोकि श्री राधिका सहित हैं! कार्तिक मास में, मैं आपकी प्रसन्नता हेतु, प्रत्येक दिन प्रातः जल्दी स्नान करूँगा।''

''हे गोपिकाओं! आपकी कृपा द्वारा राधा कृष्ण मेरे कार्तिक व्रत से प्रसन्न हो''।

1. ब्रह्म मुहूर्त तक प्रत्येक दिन उठ जायें तथा स्नान करके, जप एवं मंगल आरती में शामिल हों।

2. श्रीमद्भागवतम् श्रवण करें, विशेषकर राधा–कृष्ण की वृंदावन लीलाएं। संभव हो तो श्रवण वैष्णवों के सान्ध्यि में करें।

3. परिवार के समस्त सदस्यों सहित अधिकाधिक हरिनाम का जप–कीर्तन करें।

4. तुलसी जी की आरती, वृंदावन में नित्यवास एवं श्रीराधा–कृष्ण युगल चरणारविन्दों की सेवा की अभिलाषा के साथ करें।

5. राधा कृष्ण को नित्य दीप अपर्ण करें एवं दामोदराष्टकम् पढ़ें (अर्थ पर मनन करते हुए)।

6. नित्य यमुना में स्नान एवं वैष्णवों को दान करें।

7. वैष्णवों, वेद–शास्त्रों एवं अन्यों की निन्दा से बचें।

नोटः कार्तिक मास में अपनी किसी भी एक प्रिय खाद्य वस्तु का त्याग करने का प्रयत्न करें। कार्तिक में उड़द् दाल वर्जित है। इस मास में विशेषतः भगवान् श्री कृष्ण को दीप–दान द्वारा प्रसन्न करने हेतु आप निकटतम इस्कॉन मन्दिर में सांय 7–8 बजे तक जा सकते हैं अथवा प्रतिदिन अपने घर पर अथवा निकट के मन्दिर में दीपक अर्पण कर सकते हैं।

कार्तिक व्रत पारण

मास के अन्त में प्रातः राधा–कृष्णा की आरती करें एवं अपने संपूर्ण व्रत की तपस्या को राधा कृष्ण की प्रसन्ता हेतु अर्पित करें। वैष्णवों का सम्मान करते हुए उन्हें उपहार, दान इत्यादि देकर सुन्दर स्वादिष्ट प्रसाद अर्पित करें। इसके उपरान्त अपने व्रत का पारण उन वस्तुओं को ग्रहण करते हुए करे जिनका त्याग (उड़द्, मिठाई या अन्य वस्तु) आपने कार्तिक व्रत में किया था।

महामंत्र का गान करें एवं संपूर्ण कार्तिक में व्यतीन किए हुए राधा–कृष्ण के स्मरण रूपी रसमयी अनुभव का आस्वादन करें।

प्रतिदिन दीप-दान (अर्पण) करने की विधिः

1. सर्वप्रथम भगवान् की **बंधन—लीला** अथवा **राधा कृष्ण** के चित्र को सुंदरता के साथ अपने घर के मन्दिर में अथवा किसी अन्य स्वच्छ स्थान पर विराजमान करें। सायं 7 बजे अपने परिवार के सभी सदस्यों को वहाँ एकत्रित करें। प्रति व्यक्ति एक घी (संभव हो तो देसी गाय का घी उपयोग करें) के दीपक की व्यवस्था रखे। मिट्टी के छोटे दीपक ठीक रहेंगें। प्रतिदिन नये दीपक का प्रयोग करें। घी के स्थान पर तिल का तेल भी प्रयोग किया जा सकता है।

2. आगे पेज पर दी गयी प्रार्थना 'दामोदराष्टकम्' को सभी सदस्य पढ़ने का प्रयास करें। साथ ही साथ बारी

बारी से हर सदस्य अपने अपने दीपक द्वारा आरती करे। संस्कृत अगर नहीं पढ़ पाएं तो बाद में सभी हिन्दी अनुवाद को पढ़े। यह प्रार्थना आप इस्कॉन मन्दिर से ऑडियो सीडी के रूप में लेकर प्रतिदिन आरती के दौरान सुन सकते है।

3. तत्पश्चात् दिव्य आनन्द की अनुभूति के लिए कुछ देर तक हरे कृष्ण महामंत्र का सम्मिलित रूप से कीर्तन करें।

नोट: आरती के दौरान कमरे में दिव्य वातावरण के लिए कम से कम बिजली का प्रकाश (लाइटों) का प्रयोग करें। अगर आप निकटतम इस्कॉन मन्दिर में आकर इस आरती को साक्षात देखें तो आपका उत्साह एवं आनन्द और बढ़ेगा। अपने मित्रों एवं सम्बन्धियों को भी दीप दान की विधि एवं महत्व के बारे में अवश्य बताएँ एवं प्रेरित करें।

श्री दामोदराष्टकम्

(सत्यव्रत मुनि द्वारा रचित)

नमामीश्वरं सच्चिदानन्द रूपं,
लसत्कुण्डलं गोकुले भ्राजमानम्।
यशोदाभियोलूखलाद्धावमानं,
परामृष्टमत्यंततो द्रुत्य गोप्या।।1।।

रूदन्तं मुहूर्नेत्रयुग्मं मृजन्तं,
करांभोजयुग्मेन सातङ्कनेत्रम्।
मुहुःश्वासकपं–त्रिरेखाङ्ककण्ठ,
स्थितग्रैवदामोदरं भक्तिबद्धम्।।2।।

इतीदृक्स्वलीलाभिरानन्दकुण्डे,
स्वघोषं निमज्जन्तमाख्यापयन्तम्।
तदीयेशितज्ञेषु भक्तैर्जितत्वं,
पुनः प्रेमतस्तं शतावृत्ति वन्दे।।3।।

वरं देव! मोक्षं न मोक्षावधिं वा,
न चान्यं वृणेऽहं वरेशादपीह।
इदं ते वपुर्नाथ! गोपालबालं,
सदा में मनस्याविरास्तां किमन्यैः?।।4।।

इंद ते मुखम भुजम अबयक्तो नीलैर,
वृतं कुन्तलैः स्निग्ध रक्तैस्चः गोप्या।
मुहुश्चुम्बितं बिम्बरक्ताधरं मे,
मनस्याविरास्तामलं लक्ष्लाभैः।।5।।

नमो देव दामोदरानन्त विष्णो,
प्रसीद प्रभो! दुःखजालाब्धिमग्नम्।
कृपादृष्टि वृष्टयातिदीनं बतानु,
गृहाणेश! मामज्ञमेध्यक्षिदृश्यः।।6।।

कुबेरात्मजौ बद्धमूर्त्यैव यद्वत्
त्वया मोचितौ भक्तिभाजौ कृतौ च।
तथा प्रेमभक्तिं स्वकां में प्रयच्छ,
न मोक्षे ग्रहो मेऽस्ति दामोदरेह।।7।।

नमस्तेऽस्तु दाम्ने स्फरद्दीप्ति धाम्ने,
त्वदीयोदरायाथ विश्वस्य धाम्ने।
नमो राधिकायै त्वदीयप्रियायै,
नमोऽनन्त लीलाय देवाय तुभ्यम्।।8।।

1. मैं सच्चिदानन्द स्वरूप उन श्री दामोदर भगवान् को नमस्कार करता हूँ, जो सर्वशक्तिमान परमेश्वर हैं, एवं सत्चित् आनन्दस्वरूप श्रीविग्रह वाले है। जिनके दोनों कानों में दोनों कुण्डल शोभा पा रहे हैं एवं जो स्वयं गोकुल में विशेष शोभायमान हैं, एवं जो माँ यशोदा के भय से (माखन चोरी के समय) ऊखल (ओखली) के उपर से दौड़ रहे हैं, और माँ यशोदा ने भी जिनके पीछे शीघ्रतापूर्वक दौड़कर, जिनकी पीठ को पकड़ लिया है।

2. मैं भक्तिरूप रज्जु में बंधने वाले उन्हीं दामोदर भगवान् को नमस्कार करता हूँ जो माता के हाथ में लठिया को देख कर, रोते–रोते अपने दोनों करकमलों से, अपने दोनों नेत्रों को बराबर पौंछ रहे हैं, एवं भयभीत नेत्रों से युक्त हैं, तथा निरन्तर लंबे श्वासों से कांपते हुए, तीन रेखाओं से अंकित जिनके कण्ठ में स्थित मोतियों के हार भी हिल रहे है।

3. मैं उन्हीं दामोदार भगवान् को फिर भी प्रेमपूर्वक सैंकड़ों बार प्रणाम करता हूँ, जो इस प्रकार की बाल–लीलाओं के द्वारा अपने समस्त व्रज को, आनन्रूप सरोवर में गोता लगवा रहे हैं, एवं अपने ऐश्वर्य को जानने वाले ज्ञानियों के निकट, भक्तों के द्वारा अपने पराजय के भाव को प्रकाशित करते हैं।

4. हे देव! आप सब प्रकार के दान देने में समर्थ है; तो भी मैं आपसे मोक्ष की पराकाष्ठा स्वरूप वैकुण्ठलोक, अथवा और वरणीय दूसरी किसी वस्तु की प्रार्थना नहीं करता हूँ। मैं तो केवल यही प्रार्थना करता हूँ कि हे नाथ! मेरे हृदय में तो आपका यह बालगोपाल रूप श्रीविग्रह सदैव प्रकट होता रहे। इससे भिन्न दूसरे वरदानों से मुझ क्या प्रयोजन?

5. और हे देव! आपका यह जो मुखारविन्द अत्यन्त श्यामल, स्निग्ध, एवं घुंघराले केशसमूह से आवृत है; तथा बिंब फल के समान रक्तवर्ण के अधरों से युक्त है, एवं माँ यशोदा जिसको बारंबार चूमती रहती है, वही मुखारविन्द, मेरे मन–मन्दिर में सदा विरजामान होता रहे। दूसरे लाखों प्रकार के लाभों से मुझे कोई प्रयोजन नहीं है।

6. हे देव ! हे दामोदर! हे अनन्त! हे सर्वव्यापक प्रभो! आपके लिए मेरा नमस्कार है। आप मेरे ऊपर प्रसन्न हो जाइये। मैं दूःख समुह रूपी समुद्र में डूबा जा रहा हूँ। अतः हे सर्वेश्वर! अपनी कृपादृष्टिरूप अमृत–वृष्टि के द्वारा अत्यन्त दीन, एवं मतिहीन मुझ को, अनुगृहित कर दीजिए, एवं मेरे नेत्रों के सामने साक्षात् प्रकट हो जाइये।

7. हे दामोदर! आपने ऊखल से बंधे हुए श्रीविग्रह के द्वारा ही, नलकुवर एवं मणिग्रीव–नामक कुबेरपुत्रों को, जिस प्रकार विमुक्त कर दिया था; उसी प्रकार मुझे भी अपनी प्रेमभक्ति दे दीजिए; क्योंकि मेरा आग्रह तो आपकी इस प्रेमभक्ति में ही है, किन्तु मोक्ष में नहीं है।

8. हे देव! प्रकाशमान दीप्तिसमूह के आश्रयस्वरूप आपके उदर में बंधी हुई रज्जु के लिए, एवं जगत् के आधारस्वरूप आपके उदर को भी मेरा बारंबार प्रणाम है। और आपकी परमप्रेयसी श्रीराधिका के लिए मेरा प्रणाम है। तथा अनन्त लीला वाले देवाधिदेव आपके लिए भी मेरा कोटिशः प्रणाम है।

कार्तिक-मास में अन्य शुभ लीलाएँ (घटनाएँ)

बहुलाष्टमी: यह श्यामकुण्ड तथा राधा कुण्ड के आविर्भाव का स्मराणोत्सव है।

दीपावली पर्व: कार्तिक मास की अमावस्या को मनाया जाता है।

गौ—पूजा तथा गोर्वधन पूजा: दिपावली के पश्चात् मनाया जाता है।

कृष्णकृपाश्रीमूर्ति ए.सी. भक्तिवेदान्त स्वामी प्रभुपाद का तिरोभाव दिवस मनाया जाता है गोवर्धन पूजा के दो दिन पश्चात्।

गोपाष्टमी: शुक्ल पक्ष की अष्टमी को मनाई जाती है।

उत्थान–एकादशी के दिन श्रील गौर किशोरदास बाबाजी का तिरोभाव दिवस मनाया जाता है। कार्तिक के अन्तिम पाँच दिनों को भीष्म–पंचक भी कहते है।

उत्थान–द्वादशी: कार्तिक के शुक्ल पक्ष को उत्थान द्वादशी मनाई जाती है।

रासयात्रा या श्रीकृष्ण का रास–नृत्य कार्तिक की पूर्णिमा की रात्रि को मनाया जाता है।

कार्तिक मास में ही महाराज अम्बरीष ने एक वर्ष का व्रत लेकर 'मधुवन' में परम पुरूषोत्तम भगवान् हरि की पूजा की थी।

गोपी गीत

गोप्य ऊचुः

जयति तेऽधिकं जन्मना व्रजः
श्रयत इन्दिरा शश्वदत्र हि।
दयित दृश्यतां दिक्षु तावकास्
त्वयि धृतासवस्त्वां विचिन्वते।।1।।

गोपियों ने कहाः हे प्रियतम, व्रजभूमि में तुम्हारा जन्म होने से ही यह भूमि अत्याधिक महिमावान हो उठी है और इसलिए इन्दिरा (लक्ष्मी) यहाँ सदैव निवास करती है। केवल तुम्हारे लिए ही तुम्हारी भक्त दासियाँ हम, अपना जीवन पाल रही है। हम तुम्हें सर्वत्र ढूँढती रही है। अतः हमें अपना दर्शन दीजिए।

शरदुदाशये साधुजातसत्
सरसिजोदरश्रीमुष दृशां।
सुरतनाथ तेऽशुल्कदासिका
वरद निघ्न्तो नेह किं वधः (2)

हे प्रेम के स्वामी! आपकी चितवन शरदकालीन जलाश्य के भीतर सुन्दरतम सुनिर्मित कमल के कोश की सुन्दरता को मात देने वाली है। हे वर–दाता! आप उन दासियों वध कर रहे है जिन्होंने बिना मोल ही अपने को आपको स्वतंत्र रूप से अर्पित कर दिया है। क्या यह वध नहीं है?

विषजलाप्ययाद् व्यालराक्षसाद्
वर्षमारूताद्वैद्युतानलात्।
वृषमयात्मजाद्विश्वतो भयाद्
ऋषभ ते वयं रक्षिता मुहुः।।3।।

हे पुरूषश्रेष्ठ! आपने बारम्बार हम सब को विविध प्रकार के संकटो से–यथा विषैले जल से, मनुष्यभक्षी भयंकर अधासुर से, मूसलाधार वर्षा से, तृणावर्त

से, इन्द्र के अग्नि तुल्य वज्र से, वृषासुर से तथा मय दानव के पुत्र से बचाया हैं।

न खलु गोपिकानन्दनो भवान्
अखिलदेहिनामन्तरात्मदृक्।
विखनसार्थितो विश्वगुप्तये
सख उदेयिवान सात्वतां कुले।।4।।

हे मित्र! आप वास्तव में गोपी यशोदा के पुत्र नहीं अपितु समस्त देहधारियों के हृदयों में अन्तरस्थ साक्षी हैं। चूँकि ब्रह्मा ने आपसे अवतरित होने एवं ब्रह्माण्ड की रक्षा करने के लिए प्रार्थना की थी, इसिलिए अब आप सात्वत कुल में प्रकट हुए है।

विरचिताभयं वृष्णिधूर्य ते
चरणमीयुषां संसृतेर्भयात्।
करसरोरूहं कान्त कमादं
शिरसि धेहि नः श्रीकरग्रहम्।।5।।

हे वृष्णिधूर्य! लक्ष्मीजी के हाथ को पकड़ने वाला आपका कमल सदृश हाथ उन लोगों को अभय दान देता है जो भवसागर के भय से आपके चरणों के निकट पहुँचते है। हे प्रिय! उसी कामना को पूर्ण करने वाले करकमल को हमारे सिरों के उपर रखें।

व्रजजनार्तिहन् वीर योषितां
निजजनस्मयध्वंसनस्मित।
भज सखे भवत्किंकरीः स्म नो
जलरूहाननं चारू दर्शय।।6।।

हे व्रज के लोगों के कष्टों को विनष्ट करने वाले! समस्त स्त्रियों के वीर! आपकी हँसी आपके भक्तों के मिथ्याभिमान को चूर–चूर करती है। हे मित्र! आप हमें अपनी दासियों के रूप

में स्वीकार करें और हमें अपने सुन्दर कलम–मुख का दर्शन दें।

प्रणतदेहिनां पापकर्षणं
तृणचरानुगं श्रीनिकेतनम्।
फणिफणार्पितं ते पदाम्बुजं
कृणु कुचेषु नः कृन्धि हृच्छयम्।।7।।

आपके चरणकमल आपके शरणगत समस्त देहधारियों के विगत पापों को नष्ट करने वाले हैं। वे चरण ही गौवों के पीछे–पीछे चरागाहों में चलते हैं और लक्ष्मीजी के दिव्य धाम हैं। चूँकि आपने एक बार उन चरणों को महासर्प कालिया के फनों पर रखा था अतः अब आप उन्हें हमारे स्तनों पर रखें और हमारे हृदय की कामवासना को छिन्न–भिन्न कर दें।

मधुरिध्या गिरा वल्गुवाक्यया
बुधमनोज्ञया पुष्करेक्षण।
विधिकरीरिमा वीर मुह्यतीर्
अधरसीधुनाप्याययस्व नः।।8।।

हे कमलनेत्र! आपकी मधुर वाणी तथा मोहक शब्द, जो कि बुद्धिमान के मनों को आकृष्ट करने वाले है हम सबों को अधिकाधिक मोह रहे हैं। हमारे प्रिय वीर! आप अपने होठों के अमृत से अपनी दासियों को जीवन–दान दीजिए।

तव कथामृतं तप्तजीवनं
कविभिरीडितं कल्मषापहम्।
श्रवणमंगलं श्रीमदाततं
भुवि गृणन्ति ये भूरिदा जनाः।।9।।

आपके शब्दों का अमृत तथा आपकी लीलाओं का वर्णन इस भौतिक जगत

में कष्ट भोगने वालों के जीवन और प्राण हैं। विद्वान मुनियों द्वारा प्रसारित ये कथाएँ मनुष्यों के पापों का समूल नष्ट करती है और सुनने वालों को सौभाग्य प्रदान करती हैं। ये कथाएँ जगत–भर में विस्तीर्ण हैं और आध्यात्मिक शक्ति से ओतप्रोत हैं। निश्चय ही जो लोग भगवान् के सन्देश का प्रसार करते हैं वे सबसे बड़े दाता है।

प्रहसितं प्रियप्रेमवीक्षणं
विहरणं च ते ध्यानमंगलम्
रहसि संविदो या हृदि स्पृषः
कुहक नो मनः क्षोभयन्ति हि।।10।।

आपकी हँसी, आपकी मधुर प्रेम–भरी चितवन, आपके साथ हमारे द्वारा भोगी गई घनिष्ठ लीलाएँ तथा गुप्त वार्ताएँ–इन सबका ध्यान करना मंगलकारी है और

ये हमारे हृदयों को स्पर्श करती है। किन्तु उसके साथ, ही हे छलिया! वे हमारे मनों को अतीव क्षुब्ध भी करती है।

चलसि यद् व्रजाच्चारयन् पशून्
नलिनसुन्दरं नाथ ते पदम्।
शिलतृणांकुरैः सीदतीति नः
कलिलतां मनः कान्त गच्छति।।11।।

हे स्वामी! हे प्रियतम! जब आप गौवें चराने के लिए गाँव छोड़कर जाते है तो हमारे मन इस विचार से विचलित हो उठते हैं कि कमल से भी अधिक सुन्दर आपके पाँवों में अनाज के नोकदार तिनके तथा घास–फूस एवं पौधे चुभ जायेंगे।

दिनपरीक्षये नीलकुन्तलैर्
वनरूहाननं बिभ्रदावृतम्।
घनरजस्वलं दर्शयन्मुहूर्
मनसि नः स्मरं वीर यच्छसि।।12।।

दिन ढलने पर आप हमें बारम्बार गहरे नीले केश की लटों से ढकें तथा धूल से अच्छी तरह धूसरित अपना कमल–मुख दिखलाते है। इस तरह, हे वीर! आप हमारे मनों में कामवासना जागृत करते हैं।

प्राणतकामदं पद्मजार्चितं
धरणिमण्डनं ध्येयमापदि।
चरणपंकजं शन्तमं च ते
रमण नः स्तनेष्वर्पयाधिहन्।।13।।

ब्रह्मा द्वारा पूजित आपके चरणकमल उन सबों की इच्छाओं को पूरा करते

हैं जो उनमें नतमस्तक होते है। वे पृथ्वी के आभूषण हैं, वे सर्वोच्च सन्तोष के देने वाले हैं और संकट के समय चिन्तन के लिए सर्वथा उपयुक्त हैं। हे प्रियतम! हे चिन्ता के विनाशक! आप उन चरणों को हमारे स्तनों पर रखें।

सुरतवर्धनं शोकनाशनं
स्वरितवेणुना सुष्ठु चुम्बितम्।
इतररागविस्मारणं नृणां
वितर वीर नस्तेऽधरामृतम्।।14।।

हे वीर! आप अपने होठों के उस अमृत को हममें वितरित कीजिए जो माधुर्य हर्ष को बढ़ाने वाला और शोक को मिटाने वाला है। उसी अमृत का आस्वादन आपकी ध्वनि करती हुई वंशी लेती है और लोगों को अन्य सारी आसक्तियाँ भुलवा देती है।

अटति यद् भवानह्नि काननं
त्रुटि युगायते त्वामपश्यताम्।
कुटिलकुन्तलं श्रीमुख च ते
जड़ उदीक्षतां पक्ष्मकृद्दृषाम्।।15।।

जब आप दिन के समय जंगल में चले जाते हैं तो क्षण का एक अल्पांश भी हमें युग सरीखा लगता है क्योंकि हम आपको देख नहीं पातीं। और जब हम आपके सुन्दर मुख को, जो घुँघराले वाले से सुशोभित होने के कारण इतना सुन्दर लगता है, देखती हैं तो ये हमारी पलकें हमारे आनन्द में बाधक बनती हैं, जिन्हें मूर्ख स्रष्टा ने बनाया है।

पतिसुतान्वयभ्रातृबान्धवान्
अतिविलङ्घ्य तेऽन्त्यच्युतागताः।
गतिविदस्तवोद्गीतमोहिताः
कितव योषितः कस्त्यजेन्निषि।।16।।

हे अच्युत! आप भलीभाँती जानते है कि हम क्यों आई है? आप जैसे छलिये के अतिरिक्त भला और कौन होगा जो अर्धरात्रि में अपनी बाँसुरी के तेज संगीत से मोहित होकर उसे देखने के लिए आई तरूणी स्त्रियों का परित्याग करेगा? आपके दर्शनों के लिए ही हमने अपने पतियों, पुत्रों, पूर्वजों, भाईयों तथा अन्य सम्बन्धियों को पूरी तरह ठुकरा दिया है।

रहसि संविदं हृच्छयोदयं
प्रहसिताननं प्रेमवीक्षणम्।
बृहदूरः श्रियो वीक्ष्य धाम ते
मुहुरतिस्पृहा मुह्यते मनः।।17।।

जब हम एकान्त में आपके साथ हुई धनिष्ठ वार्ताओं का चिन्तन करती है तो

अपने हृदयों में कामोदय अनुभव करती है और आपके हँसोड़ मुख, आपकी प्रेममयी चितवन तथा आपके चौड़े सीने का, जो कि लक्ष्मी का वासस्थान है, स्मरण करती हैं तब हमारे मन बारम्बार मोहित हो जाते हैं। इस तरह हमें आपके लिए अत्यन्त गहन लालसा की अनुभूति होती है।

व्रजवनौकसां व्यक्तिरंग ते
व्रजिनहन्त्र्यलं विष्वमंगलम्।
त्यज मनाक् च नस्त्वत्स्पृहात्म्नां
स्वजनहृद्रूजां यन्निषूदनम्।।18।।

हे प्रिय! आपका सर्वमंगलमय प्राकट्य वज्र के वनों में रहने वालों के कष्ट को दूर करता है। हमारे मन आपके सान्निध्य के लिए लालायित हैं। आप

हमें वह थोड़ी–सी औषधि दे दें जो आपके भक्तों के हृदयों के रोग का शमन करती है।

यत्ते सुजातचरणाम्बुरूहं स्तनेषु
भीताः शनैः प्रिय दधीमहि कर्कशेषु।
तेनाटवीमटसि तद् व्यथते ने किं स्वित्
कूर्पादिमिर्भ्रमति धीर्यवदायुषां नः।।19।।

हे प्रियतम! आपके चरणकमल इतने कोमल है कि हम उन्हें धीरे से अपने स्तनों पर यह डरते हुए रखती हैं कि आपके पैरों को चोट पहुँचेगी। हमारा जीवन केवल आप पर टिका हुआ है। अतः हमारे मन इस चिन्ता से पूर्ण है कि कहीं आपके कोमल चरणों में जंगल के मार्ग में घूमते समय कंकड़ों से घाव न बन जाये।